International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

इतिहास का अन्य विषयों के साथ सम्बन्धों का अध्ययन

Jyoti
MA in History, MDU Rohtak
Reg. No. 04-MKR-110
Email : siwacharya@gmail.com

शोध सारः इतिहास का क्षेत्र बड़ा व्यापक है। प्रत्येक व्यक्ति, विषय, अन्वेषण आंदोलन आदि का इतिहास होता है, यहाँ तक कि इतिहास का भी इतिहास होता है। अतएव यह कहा जा सकता है कि दार्शनिक, वैज्ञानिक आदि अन्य दृष्टिकोणों की तरह ऐतिहासिक दृष्टिकोण की अपनी निजी विशेषता है। वह एक विचारशैली है जो प्रारंभिक पुरातन काल से और विशेषतः 17वीं सदी से सभ्य संसार में व्याप्त हो गई। 19वीं सदी से प्रायः प्रत्येक विषय के अध्ययन के लिए उसके विकास का ऐतिहासिक ज्ञान आवश्यक समझा जाता है। इतिहास के अध्ययन से मानव समाज के विविध क्षेत्रों का जो व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होता है उससे मनुष्य की परिस्थितियों को आँकने, व्यक्तियों के भावों और विचारों तथा जनसमूह की प्रवृत्तियों आदि को समझने के लिए बड़ी सुविधा और अच्छी खासी कसौटी मिल जाती है। इस शोध–पत्र में इतिहास का अन्य विषयों के साथ सम्बन्धों का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्दः क्षेत्र आंदोलन, ऐतिहासिक दृष्टिकोण, ऐतिहासिक ज्ञान वयावहारिक ज्ञान और पुरातन काल

शोध–प्रविधिः इस शोध–पत्र के लिए शोध सामग्री अधिकांश रूप में द्वितीयक स्रोतों से ग्रहण की गई हैं। इसमें ऐतिहासिक विश्लेषण व वर्णनात्मक दृष्टिकोण के साथ–साथ शोधकर्त्ता ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को भी स्थान दिया है। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं व समाचार पत्रों से प्राप्त की गई हैं।

इतिहास का प्रयोग विशेषत दो अर्थों में किया जाता है। एक है प्राचीन अथवा विगत काल की घटनाएँ और दूसरा उन घटनाओं के विषय में धारणा। ग्रीस के लोग इतिहास के लिए हिस्तरी शब्द का प्रयोग करते थे। हिस्तरी का शाब्दिक अर्थ बुनना था। अनुमान होता है कि ज्ञात घटनाओं को व्यवस्थित ढंग से बुनकर ऐसा चित्र उपस्थित करने की कोशिश की जाती थी जो सार्थक और सुसंबद्ध हो। इस प्रकार इतिहास शब्द का अर्थ है – परंपरा से प्राप्त उपाख्यान समूह (जैसे कि लोक कथाएँ), वीरगाथा (जैसे कि महाभारत) या ऐतिहासिक साक्ष्य। इतिहास के मुख्य आधार युगविशेष और घटनास्थल के वे अवशेष हैं जो किसी न किसी रूप में प्राप्त होते हैं। जीवन की बहुमुखी व्यापकता के कारण स्वल्प सामग्री के सहारे विगत युग अथवा समाज का चित्रनिर्माण करना दुःसाध्य है। सामग्री जितनी ही अधिक होती जाती है उसी अनुपात से बीते युग तथा समाज की रूपरेखा प्रस्तुत करना साध्य होता जाता है। पर्याप्त साधनों के होते हुए भी यह नहीं कहा जा सकता कि कल्पनामिश्रित चित्र निश्चित रूप से शुद्ध या सत्य ही होगा। इसलिए उपयुक्त कमी का ध्यान रखकर कुछ विद्वान् कहते हैं कि इतिहास की संपूर्णता असाध्य सी है, फिर भी यदि हमारा अनुभव और ज्ञान प्रचुर हो, ऐतिहासिक सामग्री की जाँच–पड़ताल को हमारी कला तर्कप्रतिष्ठत हो तथा कल्पना संयत और विकसित हो तो अतीत का हमारा चित्र अधिक मानवीय और प्रामाणिक हो सकता है। सारांश यह है कि इतिहास की रचना में पर्याप्त सामग्री, वैज्ञानिक ढंग से उसकी जाँच, उससे प्राप्त ज्ञान का महत्व समझने के विवेक के साथ ही साथ ऐतिहासक कल्पना की शक्ति तथा सजीव चित्रण की क्षमता की आवश्यकता है। स्मरण रखना चाहिए कि इतिहास न तो साधारण परिभाषा के अनुसार विज्ञान है और न केवल काल्पनिक दर्शन अथवा साहित्यिक रचना है। इन सबके यथोचित संमिश्रण से इतिहास का स्वरूप रचा जाता है।

इतिहासकार अतीत कालीन, घटनाओं केमूलभूत कारकों एवं कारणों तथा अर्थों को स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं। इसका उद्देश्य मानव के भावी विकास का दिशा निर्देशन करना होता है। गैरोन्स्की ने लिखा है कि इतिहास विगत मानवीय समाज का मानवतावादी एवं व्याख्यात्मक अध्ययन है। जिसका उद्देश्य वर्तमान सम्बन्ध में अन्तर्दृष्टि प्राप्त करना तथा अनुकूल भविष्य को प्रभावित करने की आशा है। इस प्रकार मानव समाज के अध्ययन की दृष्टि से इतिहास समस्त समाज विज्ञानों से घनिष्टता से सम्बन्ध है। विभिन्न सामाजिक विज्ञानों–भूगोल, अर्थशास्त्रा, समाज विज्ञान, नागरिक शास्त्र, राजनीति शास्त्र, नैतिक शास्त्र, साहित्य, कला, पुरातत्व, नृवंश शास्त्र, सामाजिक ज्ञान, दर्शन, तर्कशास्त्र तथा प्राकृतिक विज्ञानों से इतिहास का घनिष्ट सम्बन्ध है क्योंकि इतिहास इन सभी विषयों द्वारा वख्रणत विभिन्न पक्षों केअतीत की व्याख्या प्रस्तुत करता है। इस सम्बन्ध में ई.एच. कार का कथन दृष्टव्य है अपनी तर्क शक्ति केप्रयोग से अपने परिवेश को समझने और तद्नुरूप क्रिया करने का लम्बा संघर्ष इतिहास है। परन्तु आधुनिक युग ने इस संदर्भ में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिये हैं। अब आदमी न केवल

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

अपने परिवेश को समझने और तदनुरूप क्रिया करने की कोशिश कर रहा है और कहना चाहिये कि इसने मानवीय तर्क और इतिहास को नया आयाम दिया है। आधुनिक युग अन्य सभी युगों से ऐतिहासिकतावादी है। आधुनिक मनुष्य अभूतपूर्व रूप से आत्म चेतन है, इसलिये इतिहास चेतन है। इतिहास के इस विस्तृत क्षितिज का कारण इतिहासकारों द्वारा अन्तः अनुशासनात्मक उपागम से मानव केपरिवेश को हृदयंगम करना है। इतिहासकार परिवर्तनशील वर्तमान को समझने की दृष्टि से मानवीय अतीत को समझने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार की समझ भविष्य का पथ–प्रशस्त करती है। इतिहासकारों द्वारा मानवीय व्यवहार केसभी पक्षों का जितना अधिक ज्ञान प्राप्त किया जाता है वे उन घटनाओं को अधिक अच्छे से समझ लेते हैं, जिनका कि मूल्यांकन कर रहे होते हैं। अतः महान् इतिहासकारों का इतिहास से सम्ब(विषयों का कार्यकारी ज्ञान होना अनिवार्य है। इस सम्बन्ध में यह आवश्यक है कि प्रत्येक विषय केअध्ययन केसमय उस विषय से सहसम्बन्धित विषयों का परस्पर समवाय किया जाये।

इतिहास विषय में तथ्यों के स्पष्टीकरण के लिये भूगोल, नागरिक शास्त्र, साहित्य एवं अन्य सम्बन्ध अनुशासनों से समवाय उपयोगी रहता है। समय के अभाव में तथ्य बोधगम्य नहीं हो पाते। इतिहास शिक्षण में घटनाओं तथा उनके कार्य–कारण सम्बन्धों को समझने केलिये भूगोल, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, नीतिशास्त्र, कला, साहित्य आदि विषयों से प्रसंगानुवूफल ऐतिहासिक पाठ्यवस्तु को समवायित कर इतिहास केज्ञान को बोधगम्य बनाने में सहायता मिलती है। सोलहवीं शताब्दी में वाटसन ने एकमात्र इतिहास के अध्ययन को समस्त कलाओं का जन्मदाता स्वीकार किया था। जॉनसन ने भी लिखा कि इतिहास सभी अन्य सामाजिक विज्ञानों की पृष्ठभूमि है। ट्रैवोलियन ने इतिहास को सभी विषयों का निवासगृह कहा। जिलर ने भी इतिहास को केन्द्रीय विषय स्वीकार किया। इन विचारकों ने इतिहास केव्यापक क्षेत्रा केही कारण इसे व्यापक महत्त्व प्रदान किया परन्तु अध्ययन–अध्यापन की दृष्टि से इतिहास का क्षेत्रा संवुफचित तथा विशिष्ट बन जाता है। इतिहास से सहसम्बन्धित विषयों में भूगोल, नागरिकशास्त्रा, राजनीति विज्ञान, नीतिशास्त्रा, कला, समाजशास्त्रा, साहित्य तथा अर्थशास्त्रा प्रमुख हैं। ऐतिहासिक तथ्यों की व्याख्या में इन विषयों से समवाय उन्हें बोधगम्य बना देता है। व्यापक अर्थ में इतिहास के अन्तर्गत लगभग सभी विषयों का समावेश हो जाता है। ऐतिहासिक घटनाओं को रंगमंच की दृष्टि से भूगोल विभिन्न युगों की शासन–प्रणालियों एवं नागरिक जीवन के रूप में नागरिक शास्त्र व राजनीति विज्ञान साहित्यिक –संदर्भों के माध्यम से साहित्य, संदर्भों के अध्ययन के आधार पर मुद्रा–विज्ञान, अभिलेख शास्त्र, पुरातत्वशास्त्र सामाजिक, शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक प्रगति के अध्ययन के रूप में समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र, शिक्षा विज्ञान, कला आदि सभी विषय इतिहास के अध्ययन में सहायक होते हैं।

इतिहास का भूगोल से समवाय

इतिहास ' **का** भूगोल' से घनिष्ठ सम्बन्ध है। जॉनसन के अनुसार भूगोल के बिना इतिहास तथा इतिहास के बिना भूगोल की कल्पना करना असम्भव है। घाटे के शब्दों में मानव को अपनी भूमिका का अभिनय करने के लिये भूगोल एक रंग–मंच प्रस्तुत करता है। इतिहास में जितना मानव तत्व प्रमुख है उतना ही भौगोलिक तत्व भी महत्त्व रखता है। मानवीय तत्व से तात्पर्य मानव की इच्छा शक्ति, परिश्रम एवं ज्ञान से है। इतिहास–भूगोल परस्पर घनिष्ठता से सम्बन्धित हैं क्योंकि वे मानव गाथा में घटनाओं वेफ घटित होने वाले समय एवं स्थान तत्वों से सम्बन्धित हैं। जॉनसन ने समय ज्ञान एवं भूगोल को इतिहास के नेत्र कहा है। मानचित्र, ग्लोब, रेखाचित्र, एटलस आदि की सहायता से ऐतिहासिक घटनाओं का स्थानीयकरण, दूरी, दिशा, साम्राज्य सीमायें, अभियान मार्ग तथा प्राकृतिक स्थितियों आदि की जानकारी प्राप्त की जाती है। इसी से सम्बन्धित घटनाओं का कार्य–कारण सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है तथा तत्कालीन सामाजिक व आख्र्थक स्थिति से अवगत हुआ जा सकता है।

इतिहास का नागरिक शास्त्र एवं राजनीति विज्ञान से समवाय

दीर्घकाल से नागरिक शास्त्र एवं राजनीति विज्ञान का अध्ययन–अध्यापन इतिहास के एक अभिन्न अंग के रूप में किया जाता रहा है। वस्तुतः इतिहास से ही राजनीति एवं नागरिक शास्त्र की उत्पत्ति हुई है। नागरिक शास्त्र मानव के कार्यों का एक नागरिक रूप में अध्ययन करता है जबकि इतिहास मानव के कार्यों का सामाजिक विकास का विवरण प्रस्तुत करता है। इस तरह नागरिक शास्त्र के सिदान्तों का ऐतिहासिक विकास क्रम वेफ आधार पर निर्माण होता है। कोचर के शब्दों में इतिहास का सम्बन्ध कुछ ऐसा ही है जैसा कि वनस्पतिशास्त्र का वनस्पति से तथा जीवनशास्त्र का प्राणियों से। इतिहास के ऐसे प्रकरण जिनमें तत्कालीन शासन प्रबन्ध तथा उसके अंग विधायिका, कार्यपालिका, संविधान न्यायपालिका, नागरिक अधिकार एवं स्वायत्त शासन संस्थाओं आदि की व्याख्या नागरिक शास्त्र व राजनीति विज्ञान से समवाय के अवसर प्रदान करती है।

इतिहास तथा साहित्य का सहसम्बन्ध

जॉनसन ने लिखा कि इतिहास का आरम्भ साहित्य के एक अंग के रूप में हुआ। प्राचीनकाल से मध्यकाल तक इतिहास साहित्य के रूप में धर्म, नीति तथा राजनीति के प्रकार का माध्यम बना रहा। साहित्य के रूप में इतिहास सत्य तथ्यों की अपेक्षा कल्पना तथा अतिशयोक्ति का आश्रय अधिक लेता था इसीलिये नेपोलियन बोनापार्ट कहा करता इतिहास एक कपोलकल्पित कहानी के अतिरिक्त और क्या है? नैतिक प्रचार का माध्यम होने के कारण क्रामवेल का कथन था कि इतिहास में भगवान के दर्शन होते हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में इतिहास का वैज्ञानिक स्वरूप विकसित हुआ और वह साहित्य कल्पना तथा

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

अतिशयोक्ति से मुक्त होकर वस्तुनिष्ठ एवं वैज्ञानिक स्वरूप में प्रतिष्ठापित हुआ परन्तु साहित्य से उसका सम्बन्ध पूर्णतया विच्छिन्न नहीं हुआ। दोनों परस्पर अन्योन्याश्रित रहे। साहित्य का इतिहास से परस्पर सह–सम्बन्ध अनेक पक्षों से देखा जा सकता है। किसी ऐतिहासिक युग को समझने वेफ लिये तत्कालीन साहित्य एक पृष्ठभूमि एवं पर्यावरण–निर्माण का कार्य करता है। साहित्य–ग्रन्थ अपने युग की घटनाओं के सत्यापन हेतु प्रामाणिक होते हैं। कारलाइल ने लिखा है कि पुस्तकों में भूतकाल की आत्मा निवास करती है। जाखवस के शब्दों में तत्कालीन साहित्य अपने युग को प्रतिबिम्बित करता है। ऐतिहासिक तथ्यों की रचना करने वाले नाटक, उपन्यास, कहानी, एकांकी, कविता आदि को ऐतिहासिक वातावरण के निर्माण हेतु प्रयुक्त किया जाता है। तत्कालीन प्रामाणिक साहित्य–ग्रन्थ अथवा अभिलेखों का ऐतिहासिक तथ्यों के सत्यापन हेतु संदर्भ के रूप में अध्ययन किया जाता है।

इतिहास तथा सामाजिक ज्ञान का सहसम्बन्ध

विद्यालयों में सामाजिक ज्ञान की संकल्पना आधुनिक है और अमरीका में इस विचारधारा का विकास हुआ। इसके अन्तर्गत वास्तविक जीवन की आवश्यकता के अनुकूल इतिहास, नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र भूगोल आदि सामाजिक विज्ञानों का पृथकतः अध्ययन न करके उन्हें विशिष्ट इकाइयों में विभक्त कर संग्रथित रूप से अध्ययन कराया जाये। इस संग्रथित अथवा एकीकृत रूप में इसे 'सामाजिक ज्ञान' के नाम से जाना गया। इतिहास शिक्षण का अपना एक विशिष्ट उद्देश्य होता है भूतकाल के प्रकाश में वर्तमान को समझना सामाजिक ज्ञान के अन्तर्गत इतिहास के इस उद्देश्य की उपलब्धि नहीं हो सकती। इस प्रकार मानविकी विषयों वेफ गहन अध्ययन में सामाजिक ज्ञान अनुपयुक्त है।

इतिहास और समाजशास्त्र का सहसम्बन्ध

इतिहास अतीत की घटनाओं का वर्णन करते हुए समाज की प्रगति को प्रदशित करता है अर्थात् इतिहास सामाजिक कार्यों का विश्लेषण करता है। इससे आधुनिक समाज वेफ व्यवहार को समझने में विशेष सहायता प्राप्त होती है। पालबर्थ के शब्दों में संस्कृति और संस्थाओं का इतिहास समाजशास्त्र को समझने और उसकी सामग्री जुटाने में सहायक होता है। आरनोल्ड टायन्बी की पुस्तक 'ए स्टडी ऑफ हिस्ट्री' में सभ्यता को ऐतिहासिक अध्ययन की इकाई स्वीकार किया गया है। सभ्यताओं वेफ उत्थान व पतन का मूल्यांकन समाजशास्त्र द्वारा ही सम्भव है। इतिहासकार समाजशास्त्रा द्वारा दिये गये सामाजिक संगठन के सिदान्त पर अपनी सामग्री संयोजित करते हैं और उन सिदान्तों के आधार पर ऐतिहासिक काल की विवेचना करते हैं।

इतिहास और अर्थशास्त्र का सहसम्बन्ध

अर्थशास्त्र के अन्तर्गत 'आर्थिक विचारों का इतिहास' और 'विभिन्न देशों के आर्थिक इतिहास' का अध्ययन किया जाता है। इतिहास की प्रमुख घटनाओं के फलस्वरूप अर्थशास्त्र में अनेकानेक सिदान्तों का विकास हुआ। आर्थिक सिदान्तों के ज्ञान के बिना इतिहास का ज्ञान अधूरा रहता है। इतिहास में विभिन्न शासनकालों की आर्थिक दशाओं का उल्लेख प्राप्त होता है। सर जॉन सीले का कथन है अर्थशास्त्रा के बिना इतिहास नींव रहित है, इतिहास के बिना अर्थशास्त्र फलहीन है।

हस्तकार्य से इतिहास का समवाय

जाखवस के शब्दों में इतिहास विषय हस्तकार्य एवं कला में अभ्यास के लिये एक असीम क्षेत्र प्रस्तुत करता है। इतिहास द्वारा बालक की रचनात्मक मूल प्रवृत्ति का उन्नयन होता है तथा जब यह इतिहास वेफ शिक्षण में प्रयुक्त की जाती है तो वह इतिहास के ज्ञानार्जन को रोचक, सरल, तीव्र एवं स्थायी बना देती है। ऐतिहासिक मानचित्र, रेखाचित्र, समय–रेखा, युद–योजना, मॉडल आदि के निर्माण में बालक विशेष रुचि लेते हैं। हस्तकार्य बालकों की स्वक्रिया द्वारा ऐतिहासिक तथ्यों को सीखने में सहायक होता है। जैसे पिरामिड का मॉडल का निर्माण करते समय बालक तत्कालीन स्थापत्य, मूखत एवं चित्रकला से तादात्म्य स्थापित कर लेता है व सौन्दर्य बोध की अनुभूति उसे होती है। इस मॉडल द्वारा भूतकाल वास्तविक एवं सजीव बन जाता है। इस प्रकार यह दृष्टिगत होता है कि इतिहास का हस्तकार्य से घनिष्ठ सह सम्बन्ध है तथा उनवेफ परस्पर समवाय से ऐतिहासिक ज्ञान समृद होता है। कम उम्र के बालक ;प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक कक्षाओं केविद्यार्थी हस्तकार्य में विशेष रुचि लेते हैं। उच्च कक्षाओं के छात्र भी हस्तकार्यों से ऐतिहासिक घटनाओं व स्थितियों से अधिक सरलता से अवगत हो जाते हैं। विद्यार्थी ऐतिहासिक महापुरुषों, दुर्गों, शस्त्रों, वेश–भूषा, दृश्यों आदि के चित्र अथवा मॉडल बना सकते हैं तथा ऐतिहासिक नाटक के अभिनय हेतु रंग–मंच, वेश–भूषा, दृश्य–विधान आदि की साज–सज्जा करने में सक्षम हो सकते हैं। इससे इतिहास के नाट्यीकरण विधि से अध्ययन–अध्यापन की सहायक सामग्री उपलब्ध होती है। हस्तकार्य वेफ उपकरणों के अन्तर्गत मानचि, समय–रेखा, रेखाचित्र, मॉडल, प्रोजेक्टर, मैजिक लैटर्न द्वारा प्रक्षेपणार्थ स्लाइड्स व फिल्म स्ट्रिप्स, एकांकी, नाटक के अभिनय हेतु रंग–मंच वेश–भूषा, दृश्य विधान आदि का निर्माण ऐतिहासिक अवशेषों के आधार पर किया जाता है। इससे ऐतिहासिक अध्ययन सजीव, रोचक तथा ज्ञानवर्धक बन जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

क्र आप्टे वामन शिवराम (1969). संस्कृत हिन्दी कोश. दिल्ली, पटना, वाराणसी भारतः मोतीलाल बनारसीदास. प० 174.

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

- प्रसाद, कालिका (2000). बृहत हिन्दी कोश. वाराणसी भारतः ज्ञानमंडल लिमिटेड. प० 147.
- नाहर, डॉ रतिभानु सिंह (1974). प्राचीन भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास. इलाहाबाद, भारतः किताबमहल. प० 1.
- Whitney, W. D. (1889). The Century dictionary; an encyclopedic lexicon of the English language. New York: The Century Co. Page 2842
- माइकल मोरिलो, स्टेफन (2006). What is Military History, ऑक्सफोर्डः राजनीति प्रेस पृ० 3ए 4.
- कोक्रेन, एरिक (1975). What Is Catholic Historiography- Catholic Historical Review 61 (2): 169 . 190.